देवीभागवतपरीक्षा

(पं० लेखराम कृत उर्दू से भाषानुवाद)

पुस्तकसंख्या ३३

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती स्थापित

वे० पु० प्रचारक फण्ड द्वारा प्रकाशित

वेदभाष्यकार पं० तुलसीराम स्वामी

के प्रबन्ध से स्वामियन्त्रालय

मेरठ में मुद्रित

आर्यसंवत् १९७२९४९००० अक्तूबर सन् ९८

३००० प्रति द्वितीयबार

वैदिकपुस्तकप्रचारकफ़ण्ड से छपी पुस्तकें

समीक्षाकार ≡) क्या स्वामी दयानन्द नक्कार था)॥ हिन्दु आर्य नमस्ते का अन्वेषण)॥। अन्त्येष्टिकर्म अवश्यक है)॥। पुरुषसूक्त)॥ मनुष्यसमाज)॥ मनुष्य जन्म की सफलता)॥ श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का जीवन चरित्र)॥ मृतक श्राद्ध खण्डन)॥ आर्योजागृत हो)॥ आर्यसमाज के नियमों से वेद मन्त्रों का सम्मेलन)॥ कृश्चियन मत दर्पण)॥ ईसाईमतखण्डन १ भाग)। दूसरा भाग)। ईसाई मत लीला)। नीति शिक्षावली)। सुशीलादेवी)। श्रीराम जी का दर्शन कलियुग लीला काशीमाहात्म्य)। महाशङ्कावली १ भाग)। दूसरा भाग)। शिवलिङ्गपूजाविधान)। श्री नृसिंह जी की विचित्र कथा)। रामायण का आल्हा)। पुराण किसने बनाये)। पं० रामचन्द्र वेदान्ती का उत्तर)। श्री शङ्करानन्द जी के अनमोल उपदेश और अमेरीका निवासी डेविस की राय)। नित्य कर्मविधिः)। जिस में अर्थ सहित पञ्चयज्ञ हैं उत्सवों पर और मेले में बांटने योग्य है पांचवीं बार छः हज़ार छपी है ॥ भजनपचीसी)॥

प्रबन्धकर्ता—ब्रह्मानन्द सरस्वती सदर—मेरठ

ओ३म्

देवीभागवतपरीक्षा

हमारे हिन्दू भाई पुराणों को बड़ी प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते और उन की कथाओं को प्रेम से सुना करते हैं, इस के अतिरिक्त वह बहुत कुछ तन, मन, धन, भी उन के अर्पण करने से नहीं हिचकिचाते। परन्तु विशेष कर के देखा जाता है कि वह असलियत की तरफ़ ज़रा भी ध्यान नही देते इस कारण हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि अपने भाइयों की सेवा में कुछ निवेदन करें॥

॥ दोहा ॥

मारग में कण्टक निरखि, जो तोहि देहि बताय।
हितू तुम्हारो जगत् में, सांचो सोई लखाय॥

नहीं तो धोखा देने वाले मनुष्य लोभजाल में फंस कर क्या कुछ इन्द्रजाल नहीं रचते। प्रकट हो कि ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, बृहस्पति, चन्द्रमा, बुध, शुक्र, आदि महात्मा पूर्व समय में बड़े नामी गिरामी विद्वान्, राजा, महाराजा हुवे हैं। सत्य शास्त्रों में उन की अत्यन्त प्रतिष्ठा की गई है। और ऋषि मुनि देवताओं की पदवी से लिखे गये हैं। किन्तु पुराण उन की हतक (अप्रतिष्ठा)

करते हैं और कोई ऐसा कलङ्क नहीं जो इन देवतों पर नहीं लगाते हैं। जैसे लिखा है कि "बृहस्पति चन्द्र देवता के गुरु थे" बृहस्पति जी की स्त्री तारा चन्द्रमा के घर गई और दोनों परस्पर एक दूसरे के प्रेम में फंस कर वर्षों तक कामचेष्टा करते रहे। बृहस्पति दोबारा मांगने के वास्ते आये परन्तु चन्द्रमा ने इनकार किया, बृहस्पति ने कहा कि तू पापी है। उसने जवाब दिया कि तू कौन धर्म्मात्मा है ? (देवी भागवत स्कन्ध १ अध्याय ११ श्लोक ३ से प्रारम्भ होकर अन्त तक और उसी का श्लोक ६०) तूने अपने छोटे भाई की स्त्री घर में डाली हुई है, जैसा मैं स्वरूपवान् हूं वैसी ही तेरी स्त्री भी यह मेरे लायक है। तेरे जैसे कुरूपों से इस का कोई सम्बन्ध नहीं। इस पर बृहस्पति ने इन्द्र से शिकायत की। इन्द्र ने वकील भेजा। चन्द्रमा ने जवाब दिया कि इन्द्र देवता लोगों को तो समझाते हैं मगर अपने कर्म्मों को ध्यान में नहीं लाते। गौतम की स्त्री अहल्या के साथ उन्हों ने क्यों व्यभिचार किया था और क्यों हज़ारों वर्ष तक सहस्त्रभग होकर मानसरोवर की झील में कमल फूल की नाल के भीतर लज्जा से छिपे रहे (दे० भा०

स्क० १ अ० ११ श्लो० ५५, ५६ और इसकी संस्कृत टीका नीलकण्ठकृत पृ० ४५ बम्बई की छपी) जब यह जवाब पहुंचा तब इन्द्र गुस्से होकर सेना लेकर लड़ने को आया। उस की मदद को ब्रह्मा भी आये। इधर चन्द्रमा की कुमक पर शुक्रदेव जी और महादेवजी भी आये और चन्द्रमा को समझाया कि ख़बरदार "बृहस्पति की स्त्री न देना" (दे० भा० स्क० १ अ० ११ श्लो० ६४) ब्रह्मा ने चन्द्रमा को समझाया कि उस की स्त्री देदे, यह बड़ा पाप है। चन्द्रमा ने जवाब दिया कि उसने स्वयं आप ही अपनी बृहस्पति स्मृति में कहा है कि स्त्री को व्यभिचार कराने से जो पाप होता है वह रजस्वला होने पर दूर होजाता है। (दे० भा० स्क० १ अ० ११ श्लो० २२, ५७) जैसे ब्राह्मण का पाप वेद पढ़ने से। अन्त को कई वर्ष तक युद्ध हुवा। आख़िर शुक्र के कहने से चन्द्रमा ने वह स्त्री बृहस्पति को देदी। जिस को वह महाराज ख़ुशी से घर ले गये (दे० भा० स्क० १ अ० ११ श्लो० ७३) परन्तु वह गर्भवती हो चुकी थी (दे० भा० स्क० १ अ० ११ श्लोक ७०) बृहस्पति के घर जाकर बेटा (वहीं श्लोक ७५। ७६) पैदा हुवा। जिस का नाम बुध देवता रक्खा गया।

चन्द्रमा ने तकरार किया (वहीं श्लोक ८९ । ९०) कि बेटा मेरा है । इस पर बृहस्पति ने देने से इन्कार किया। जिस पर युद्ध की नौबत पहुंची । अन्त को ब्रह्माजी ने तारा से पूछा कि " यह किस का गर्भ है" उस ने जवाब दिया कि "चन्द्रमा का" ब्रह्मा ने बुध को चन्द्रमा के हवाले किया। फिर वहीं श्लोक ४ । ५ में लिखा है कि एक बार विष्णुजी महाराज दैत्यों से युद्ध करते हुये दस हज़ार वर्ष व्यतीत होने पर थक कर एक जगह जाकर धनुष के सिरे को सिर के नीचे रख कर (अ० ६ श्लोक ३ । ७) सो रहे । देवतों ने वैकुण्ठ में तलाश की । जब वहां न मिले तो तलाश करते हुये उस जङ्गल में आये। अब सोते को जगाना बड़ा पाप समझ कर लाल बुझक्कड़ों की तरह अक़्ल दौड़ाने लगे, आख़िर यह क़रार पाया कि वमरी अर्थात् भौंरी जानवर पैदा कर के उस से यह सेवा ली जावे। तथा च ऐसा ही हुवा, मगर उस ने इन्कार किया कि "मुझे इस पाप (जगाने) से क्या लाभ होगा" देवतों ने कहा कि तुझे यज्ञ में भाग दिया करेंगे। जिस पर राज़ी होकर उस ने उस धनुष की रस्सी को काटा, मगर काटते ही (अ० ५ श्लोक १६–२४) बड़ा शोर

हुवा। उस धनुष की चोट से विष्णु का सिर कट कर समुद्र में जा गिरा। सब देवता हैरान हुये। फिर ब्रह्मा जी बोले कि भाइयो! करणी का फल अवश्य भोगना पड़ता है, और सब से (अ० ५ श्लोक ३४) पहिले स्वयं मुझे फल भोगना पड़ा। अर्थात् मेरा शिर शिव ने काट लिया और शिव जी आप भी खाली (अ० ५ श्लोक ४५) न रहे। ऐसे ही कामों से उस का लिङ्ग बदन से काटा गया। और इन्द्र देवता अहल्या के साथ व्यभिचार करने से सहस्त्रभग होकर मानसरोवर के तालाब में लज्जित रहे। अन्त को सब ने (अ० ५ श्लोक ४६–१००) देवी की स्तुति की। जिस पर वह प्रसन्न हुई और हुक्म दिया कि घोड़े का सिर काट कर लगा दो। तथा च वही लगाया गया। जिस पर उस दिन से वह "हयग्रीव" अवतार (अ० ५ श्लोक १०४–१०९) हुवा है। धड़ आदमी का, सिर घोड़े का है। इस अध्याय के सुनने का बड़ा पुण्य है। जो सुनैगा उस की मुक्ति हो जायगी। फिर इसी भागवत में लिखा है कि राजा *उपरिचर वन में शिकार खेलने गया। वहां पर अपनी प्यारी स्त्री कुरिगा की याद में

* (स्कन्ध २ अ० १ श्लोक ४६–१००)

उस का *वीर्य्य स्खलित हुवा। उस ने वीर्य्य को किसी वृक्ष के पत्ते में बन्द कर के (पार्सल की तरह) शाहीन या जुर्रा शिकारी पक्षी के द्वारा घर को रवाना किया। आकाश मार्ग में एक दूसरा जुर्रा मिल गया। युद्ध होने लगा। वह स्थान यमुना नदी के ऊपर था। वह पार्सल गिरपड़ा। नीचे (वहीं श्लोक २८—३२) एक अप्सरा किसी ऋषि के शाप से मछली बनी हुई नदी में तैर रही थी गिरते ही उसे मुंह में ले लिया। वह गर्भवती होगई। जब गर्भ की मुद्दत गुज़र गई तो वह एक निषाद ने पकड़ली। (वहीं श्लोक २५—४०) पेट चीरने पर एक लड़का एक लड़की निकल आई। वह दोनों को राजा वसु के पास लेगया। राजाने लड़का ले लिया, लड़की वापिस देदी। उस ने उसे पाला और उस का नाम मत्स्योदरी, काली, कालिका, मत्स्यगन्धा हुवा। वह बड़ी होने पर बाप के साथ केवट का काम किया करती थी। दैवात् एक दिन पराशर (वहीं श्लोक १—५) मुनि वेद के जानने वाले वहां आये और नदी उतरने का इरादा किया। केवट रोटी खा रहा था। लड़की काली को आज्ञा दी

स्कन्ध २ अ० १ श्लोक १२। १५। २१। २२। २६। २७

कि तू नाव लेजा और इन को पार कर दे। तथा च ऐसा ही हुवा। जब दरिया के बीच पहुंचे मुनि जी को बुरा सङ्कल्प मन में उठा, मदोन्मत्त हो विवश हुये। इस का दाहना हाथ अपने दाहने हाथ से पकड़ा, काली ने इनकार किया और मुनि को बहुत समझाया, मगर इन्हों ने न माना, आख़िर उस ने इकरार किया कि दरिया के पार जाकर काम करेंगे। जब किनारे पर पहुंचे तब मुनि ने हाथ पकड़ा, उस ने फिर समझाना शुरू किया। मगर इन्हों ने न माना, तब काली ने कहा कि मेरे शरीर से मछली की बुरी दुर्गन्ध आती है, (वहीं श्लोक १०–से १४) ऋषि ने वरदान दिया जिस से वह योजनगन्धा हो गई, अर्थात् उस के बदन से चार कोस तक कस्तूरी की सुगन्ध आने लगी। तब उस ने कहा कि (वहीं श्लोक २०–२४) मेरा बाप किनारे पर देखता है, दिन प्रकाशमान है, ऋषि ने तपोबल कर के कुहर पैदा कर लिया, पर्दा हो गया, फिर उस ने कहा कि आप कामचेष्टा कर (वहीं श्लोक २५–२७) के चले जावेंगे, मेरा फिर क्या हाल होगा। मुझे क्षतयोनि होने से कौन स्वीकार करेगा। मेरा गुज़ारा किस तरह चलेगा। मेरा बाप क्या कहेगा। लोग क्या

कहैंगे। ऋषि ने वरदान दिया कि फिर पूर्ववत् अक्षत-योनि (कुमारी) होजावेगी। इस के पश्चात् फिर उस ने वर मांगा कि मेरे पुत्र तुम जैसा (वहीं श्लोक २८—३०। ३६। ४१) ही हो और स्वरूप प्रतिदिन बढ़ने वाला, तथा सुगन्ध सदैव रहै। इन सब के पीछे वह बदकारी हुई और सुहबत के पीछे लड़का पैदा हुवा उसी जगह पर, जिस का नाम व्यास या कृष्णद्वैपायन कहा गया। पराशर जी भी चले गये और व्यास जी मत्माता से आज्ञा लेकर जङ्गल को चले गये। फिर (वहीं अ० ३ श्लोक १—१४) उसी मत्स्योदरी पर राजा शन्तनु भीष्मपितामह के पिता मोहित हुये और उस से विवाह किया। उसी के पेट से चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य्य दो राजा उत्पन्न हुये और जब यह दोनों मर गये तो उन की निम्न लिखित स्त्रियें विधवा होगईं। अम्बिका, अम्बा, अम्बालिका, इन तीनों स्त्रियों के साथ व्यास जी ने नियोग किया जिस से धृतराष्ट्र अन्धा (वहीं अ० ६ श्लोक २—४) पाण्डु और विदुर पैदा हुये जो भारत वर्ष के बड़े नामी गरामी राजा हुये जो कौरव पाण्डव मशहूर हैं॥

इति

विदुरनीति भाषा टीका सहित ।=) जिल्द वाली ॥)
इस पुस्तक का पण्डित तुलसीराम स्वामी ने भाषार्थ बहुत सरलता से किया है तथा कहीं २ भावार्थ भी खोला गया है। ऐसी उत्तम पुस्तक आज तक नहीं छपी है यह पुस्तक आर्य्यपाठशालाओं में नियत करने योग्य है जिस से विद्यार्थी को धर्मानुसार लोकव्यवहार का ज्ञान हो तथा व्याख्यान के उपयोगी श्लोक भी बहुत हैं।

भजनों की पुस्तकें—आर्यसंगीतपुष्पावली जिल्द वाली ॥) उर्दू ॥) सभाप्रसन्न ।)॥ उर्दू ≡)॥ प्रेमोदयभजनावली ≡) सङ्गीतरत्नाकर =) भजनामृतसरोवर ≠) बहारेनैरङ्ग प्रथम =) दूसरा ।) सङ्गीतसुधासागर -) भजनविवेक)॥
स्त्रीशिक्षा की पुस्तकें—स्त्रीधर्मनीति १) सीताचरित्र नावल १ भाग ।॥) उर्दू चारों भाग १॥।) बुद्धिमती ।-) हुक्नदेवी =)। भामिनीभूषण ।) अबलाविनय ≡)। पाकरत्नाकर ।=) नारीसुदशाप्रवर्तक १ भाग =) दूसरा ≡)। तीसरा ।=) चौथा ।=) कन्यासुधार -) स्त्रीसुबोधिनी ।॥=) यह बड़े उत्तम २ उपन्यास देखने योग्य हैं—अमलावृत्तान्तमाला मू० ।॥) जिस में रिशवत लेने वाले अमलों की बड़ी मिट्टी पलीत की है तथा सत्य और धर्म का जय दिखलाया है।

मधुमालती ।।।) सुवर्णलता ।।।) दीपनिर्वाण ।।।) चिर को घातकी ।।।) इला ।।= प्रमिला ।।=) अकबर ।।) जया ।।) वीरनारी ।-) चन्द्रकला ।) अद्भुतनाश ।=) संसारदर्पण २) श्रीछत्रपति शिवा जी महाराज मरहटे का जीवनच-रित्र ।) वीरेन्द्रवीर और कटोराभरखून ।।=) सद्धर्मप्रकाश १) वेदान्तप्रदीप ।।) लंडनयात्रा ।=) आर्यसमाजपरिचय ।) स्वरसंरक्षा ।) योगमार्गोपदेशिका ≡) लेखदीपिका ।) वेश्यानाटक ।)।। उर्दू =)।। खेतीविद्या के मुख्यसिद्धान्त ।।=) प्रबन्धार्कोदय ।-) दमयन्तीस्वयंवरनाटक ≡) बाल-विवाह हिताहितविचार =)।। भर्तृहरिसार =) सत्यासत्य विचार -)। रसराज।=) (काव्य का ग्रन्थ है) आत्मज्ञानप्र-काश≡)।। नारायणीशिक्षा अर्थात् गृहस्थाश्रम सू० १।) जो कई महीनों से छपता था तैयार होगया उर्दू में १।।) वीर्यरक्षा ≡) गर्भाधानविधि ≡) सत्यनारायण की कथा =) पं० घनश्याम जी कृत । मौत का डर -)।। भजनेन्दु -)

ब्रह्मानन्द सरस्वती प्रबन्धकर्ता

वैदिकपुस्तकप्रचारकफ़ण्ड—सदर—मेरट